ज्ञान शांति मैत्री

राष्ट्रीय सामाजिक रक्षा संस्थान

(सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय, भारत सरकार)

द्वारा अनुदानित

क्षेत्रीय संगोष्ठी

(Regional Seminar)

दिनांक : 19-20 मार्च 2024

विषय : "वृद्धों के कल्याण, सशक्तिकरण एवं सुरक्षा का देशज दृष्टिकोण"

Theme: Indigenous approach to welfare, empowerment and protection of Senior Citizen

आयोजक

वर्धा समाज कार्य संस्थान

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र, भारत

ई-मेल : wardhasks@hindivishwa.ac.in

वेबसाइट : https://hindivishwa.org/school.aspx#

Follow Us on Social Media /VCOMGAHV @VCOMGAHV /VCOMGAHV

प्रस्ताविकी :

वृद्धावस्था जीवन की स्वर्णिम अवस्था मानी जानी चाहिए तथा इस अवस्था मे नागरिकों को उनके समर्पण, उपलब्धियों और जीवनपर्यन्त समाज को दी गई सेवाओं की सराहना करते हुए उनका सम्मान किया जाना चाहिए। भारतीय संदर्भ में वृद्धजनों की बढ़ती जनसंख्या के कारण इस संकल्पना को मूर्त रूप देना न केवल नीति निर्धारकों अपितु विभिन्न संस्थाओं के समक्ष भी एक चुनौती है। यदि इस संदर्भ में गहन विचार-विमर्श कर योजनाबद्ध ढंग से प्रयास नहीं किया गया तो आने वाले समय में यह एक विकराल समस्या का रूप धारण कर सकती है। यह भी कडवा सच है कि अभी भी हमारे संस्थागत व संरचनात्मक ढ़ाचे में उस प्रकार के परिवर्तन नहीं हो पाए हैं जिससे वृद्धजनों के जीवन की गुणवत्ता में वृद्धि किया जा सके। इसी कारण वरिष्ठजन अनेक समस्याओं से ग्रस्त होते जा रहे हैं और वृद्ध कल्याण एक गंभीर मुद्दा बनता जा रहा है। महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के वर्धा समाज कार्य संस्थान द्वारा आगामी 19-20 मार्च 2024 को राष्ट्रीय सामाजिक रक्षा संस्थान (सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय, भारत सरकार) द्वारा अनुदानित एक क्षेत्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है, जिसमें महाराष्ट्र सहित मध्य व पश्चिमी भारत के वृद्धजनों की विभिन्न चुनौतियों एवं उनके कल्याण (Well-being) को केंद्र में रखते हुए संपूर्ण भारतीय परिपेक्ष्य में वृद्ध कल्याण, सशक्तिकरण एवं सुरक्षा पर वृहद विमर्श किया जाएगा।

उक्त क्षेत्रीय संगोष्ठी के माध्यम से समाज कार्य के साथ ही अन्य विषयों अनुशासन के विद्वानों, शोधार्थियों, अभ्यासकर्ताओं द्वारा वृद्धजनों से संबंधित विभिन्न मुद्दों, समस्याओं एवं चुनौतियों पर गहन चिंतन और विचार-विमर्श किया जाएगा जिससे कि वृद्धों के सशक्तिकरण, कल्याण के संबंध में उपयुक्त कार्यनीतियों, रणनीतियों और कार्यक्रमों का विकास किया जा सके।

उप-विषय :

- वृद्धों के कल्याण, सशक्तिकरण व सुरक्षा का सैद्धांतिक पक्ष
- वृद्धावस्था की समस्याएं, चुनौतियाँ एवं प्रमुख मुद्दे
- वृद्धजनों के कल्याण की भारतीय अवधारणा
- वृद्धावस्था में स्वास्थ (शारीरिक व मानसिक) देखभाल
- साहित्य के क्षेत्र में वृद्धों हेतु किए जा रहे कार्य व प्रमुख कृतियाँ
- वृद्ध देखभाल और प्रबंधनः वृद्धावस्था के लिए आवश्यक ज्ञान एवं कौशल
- वृद्धावस्था एवं संस्थागत देखभाल
- भारत में वृद्धजनों के कल्याण से संबंधित नीतियां, विधान व कल्याणकारी प्रावधान
- भारत में वृद्धजनों हेतु किए जा रहे सरकारी प्रयास एवं सामाजिक सुरक्षा संबंधी उपाय
- वृद्ध कल्याण के क्षेत्र में स्वयंसेवी संगठनः अंतरराष्ट्रीय, राष्ट्रीय व क्षेत्रीय
- वृद्धजनों के प्रति मीडिया का दृष्टिकोण

प्रविधि :

इस क्षेत्रीय संगोष्ठी में विभिन्न विद्वानों, शोधार्थियों, अभ्यासकर्ताओं, हितधारकों/हितरक्षकों आदि के बीच परस्पर संवाद स्थापित करने का प्रयास किया जाएगा। इसमें शोध पत्र-वाचन, संवाद, व्याख्यान, आदि के माध्यम से वृद्धजनों से संबंधित विभिन्न मुद्दों, समस्याओं एवं चुनौतियों पर गहन चिंतन और विचार विमर्श किया जाएगा जिससे कि उनके कल्याण के संबंध में उपयुक्त कार्यनीतियां, रणनीतियां और कार्यक्रमों का विकास किया जा सके।

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय वर्धा :

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय की स्थापना 1997 में हुई तथा यह महाराष्ट्र राज्य का एकमात्र केंद्रीय विश्वविद्यालय है। यह विश्वविद्यालय उच्च शिक्षा के वैश्विक कड़ी के रूप में संवर्धित हो रहा है। विश्वविद्यालय हिन्दी भाषा के माध्यम से भारतीय लोकाचार एवं सांस्कृतिक विरासत का प्रख्यापन करने हेतु सदैव प्रतिबद्ध व समकालीन वैज्ञानिक दृष्टिकोण को बढ़ावा देने के प्रति प्रयत्नशील रहा है। महात्मा गांधी के दार्शनिक सिद्धांत इस संस्थान की कार्य संस्कृति, प्रशासन और परिचालन की आधारशिला हैं।

वर्धा समाज कार्य संस्थान इसी विश्वविद्यालय का एक संस्थान है, जिसका प्रारंभ सन 2007 में महात्मा गांधी फ्यूजी गुरुजी शांति अध्ययन केंद्र के रूप में हुआ। यह आगे चलकर समाज कार्य अध्ययन केंद्र के रूप में स्थापित हुआ। सन 2022 में इस अध्ययन केंद्र को वर्धा समाज कार्य संस्थान के रूप में पुनर्गठित किया गया। यह संस्थान समाज कार्य शिक्षा के देशज स्वरूप, सिद्धांतों और पद्धतियों की समाजिक आधारशिला को मजबूत बनाने तथा उसके महत्व को रेखांकित करने के लिए समर्पित है। संस्थान राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप स्नातक, स्नातकोत्तर और डॉक्टरेट तीनों स्तरों पर समाज कार्य के लिए एक शैक्षिक पाठ्यक्रम तैयार करने और प्रख्यापित करने हेतु सतत् प्रयत्नशील है। इस हेतु संस्थान समाज कार्य शिक्षा के विभिन्न पाठ्यक्रमों में भारतीय मूल्यों व दृष्टिकोणों तथा दार्शनिक परंपराओं को समाहित करते हुए स्वदेशी ज्ञान स्रोतों का उपयोग करने का भी प्रयास करता रहा है। संप्रति, संस्थान द्वारा बैचलर ऑफ सोशल वर्क (बीएसडब्ल्यू), मास्टर ऑफ सोशल वर्क (एमएसडब्ल्यू), और पी-एच.डी. (समाज कार्य) कार्यक्रमों का संचालन किया जा रहा है।

आयोजन समिति

मुख्य संरक्षक : डॉ. भीमराय मेत्री, कुलपति, म.गां.अं.हि.वि.वि., वर्धा

संयोजक : प्रो. बंशीधर पाण्डेय, निदेशक, वर्धा समाज कार्य संस्थान

सह-संयोजक :

1. डॉ. के. बालराजु, एसोसिएट प्रोफेसर, वर्धा समाज कार्य संस्थान
2. डॉ. मिथिलेश कुमार तिवारी, सहायक प्रोफेसर, प्रयागराज केंद्र
3. डॉ. शिव सिंह बघेल, सहायक प्रोफेसर, वर्धा समाज कार्य संस्थान

शोधपत्र / आलेख हेतु आमंत्रण :

आयोजन समिति इस क्षेत्र मे कार्यरत व शोध कार्य कर रहे, शिक्षाविदों अभ्यासकर्ताओं, विद्यार्थियों आदि से संगोष्ठी की तिथियों में नियोजित विभिन्न वैज्ञानिक सत्रों में प्रस्तुति हेतु आलेख/शोधपत्र आमंत्रित किए जा रहे हैं।

क्षेत्रीय संगोष्ठी हेतु आमंत्रित प्रतिभागियों से ईमेल : **wardhasks@hindivishwa.ac.in** के माध्यम से 15 मार्च, 2024 तक अधिकतम 500 शब्दों की शोध सारांशिका प्रेषित करने हेतु अनुरोध है। शोध सारांशिका की स्वीकृति के संबंध में सूचना 16 मार्च, 2024 तक ई मेल द्वारा दे दी जाएगी। पूर्ण शोधपत्र/आलेख भेजने की अंतिम तिथि 18 मार्च, 2024 है।

शोध पत्रों/आलेखों का प्रकाशन

इस राष्ट्रीय सम्मेलन में प्रस्तुत किए गए शोध पत्रों की समीक्षा ब्लाइंड पीयर रिव्यू पद्धति से की जाएगी तथा इस प्रक्रिया से चयनित आलेखों को आई.एस.बी.एन. वाली संपादित पुस्तक में प्रकाशित किया जाएगा।

शोध पत्र/ आलेख एवं सारांशिका हेतु आवश्यक निर्देश

1. प्रस्तुतकर्ताओं से अनुरोध है कि उनके द्वारा प्रस्तुत शोध पत्र/आलेख उनका मौलिक कार्य होना चाहिए तथा वह प्रत्यक्ष रूप से सम्मेलन विषय से सम्बन्धित होना चाहिए।
2. लेखकों से अनुरोध है कि अपने शोध पत्र/आलेख के साथ शीर्षक, लेखक का नाम, सांस्थानिक परिचय एवं सम्पर्क सूत्र का भी वर्णन करें।
3. प्रत्येक शोध पत्र का प्रारम्भ शीर्षक से होगा तदुपरान्त सारांशिका प्रमुख पदों की सूची होगी।
4. सारांशिका, शोधपत्र/आलेख का हिंदी प्रारूप Kruti dev-10, Font Size-12, 1-5 line Spacing व अंग्रेजी प्रारूप Times New Roman, Font Size 12 मे ही होना चाहिए।
5. सारांशिका (Abstract) 500 शब्दों तथा शोध पत्र/आलेख अधिकतम 3,500 शब्दों में होना चाहिए।
6. शोध पत्रआलेख मे संदर्भ APA Style में होना चाहिए।

पंजीकरण : पंजीकरण पूर्णतया निःशुल्क है।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें :

1.	डॉ. के. बालराजू सह-आचार्य	+91-8500745123	सह-संयोजक
2.	डॉ. शिव सिंह बघेल सहायक-आचार्य	+91-8999934212	सह-संयोजक
3.	डॉ. गजानन एस. निलामे अतिथि अध्यापक	+91-9579587288	सदस्य-आयोजन समिति